प्राक्कथन

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में छतीसगढ़ अंचल के "धमतरी" का राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस क्षेत्र के कण्डेल नहर सत्याग्रह का इतना महत्वपूर्ण योगदान रहा है कि महात्मा गाँधी भी असहयोग आंदोलन के पूर्व यहां आये थे और उसकी प्रसंसकता की थी तथा इसके पश्चात् राजगंगपालाचारी एवं सुभद्रा कुमारी चौहान को कांग्रेस की ओर से जानकारी के लिये यहां भेजा गया था।

कण्डेल नहर सत्याग्रह मूलतः एक कृष्ण आंदोलन था जो देश प्रसिद्ध बाड़ोली आंदोलन के पूर्व हुआ था। गाँधी जी ने इसे द्वितीय बाड़ोली की संज्ञा दी थी।

इसी प्रकार खुदी नवांतांव सत्याग्रह, सिहावा, राजिम सत्याग्रह आदि अनेक आंदोलन हुए जिनका इतिहास में विशिष्ट महत्व है।

छतीसगढ़ के राष्ट्रीय आंदोलन में राजनीतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से धमतरी अंचल का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

मैंने अपने इस शोध कार्य को सात प्रमुख अध्याय के अंतर्गत विभक्त किया है। प्रथम अध्याय में मैंने छतीसगढ़ की भौगोलिक परिस्थितियों एवं धमतरी अंचल का भौगोलिक परिचय दिया है। छतीसगढ़ क्षेत्र सतपुड़ा की पहाड़ियों, मैदानी भागों, जंगलों एवं नदियों के चुनौतियुद्ध संग्रह है। एक-दूसरे वातावरण धूली है यह जगत विशाल भू-भाग में फैला हुआ है। यहां के नदियों में प्रमुख महानदी, शिवनाथ, इत्राबारी, अरपा, हसदो आदि नदियां हैं। छतीसगढ़ का लंबाई दो तिहाई भाग बने थे। वहां की जलवायु गर्म व आइला युक्त है। छतीसगढ़ के नदियों में प्रमुख रूप से मानसूनी पर्वतारोही बन पड़े हैं। इनके पतझड़ के बन भी कहते हैं। भू-भाग की दृष्टि से यह क्षेत्र भौगोलिक इकाइयों का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है या हम यह कह सकते हैं कि इस क्षेत्र मध्यम में भौगोलिक संरचना का उन्मूलन उदाहरण है।

छतीसगढ़ की भौगोलिक संरचना को देखने के पश्चात् हम धमतरी क्षेत्र की
भौगोलिक संरचना पर विचार करें। धमतरी छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह क्षेत्र हर तरह से अपने आप में सक्षम है। चाहे वह धार्मिक हो, आधिकारिक, व्यवसायिक या फिर अन्य किसी भी हद तक से यह क्षेत्र सक्षम है। इस क्षेत्र का उत्तरी भाग एकदम मैदानी इक्काका है। दक्षिणी भाग इसके विपरीत बंगला और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र का अन्यांत्रित दक्षिणी भाग केवल सपन बनों और पतली से ही ओट-प्रोट है। यह बंगाली क्षेत्र धमतरी से केवल पर्वत पीठ की दूरी से ही प्रारंभ हो जाता है। जो पूर्व व पश्चिम की ओर फैला हुआ है। उत्तरी भाग रामपुर से लगा हुआ है। जो अधिक उपजाऊ है। पूरी भाग में पैरी नदी है। जो अंतर्दीवी है।

द्वितीय अध्यायांतरित में छत्तीसगढ़ एवं धमतरी का ऐतिहासिक परिचय दिया गया है। प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोलकाता के नाम से जाना जाता था। छत्तीसगढ़ के इतिहास में हैवाचारी अथवा कलचुरियों का शासन सबसे अधिक गोरखा रहा है। प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोलकाता, महाकांतर, दुप्लकारण आदि विभिन्न नामों से जाना जाता था। आयव अथवा कसरूतियों का संगम-स्थल होने के कारण इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गारीमा में लगातार वृद्धि होती रही है।

धमतरी की ऐतिहासिकता का उल्लेख प्राचीन ग्रंथ की प्रसिद्ध पुस्तक प्राचीन छत्तीसगढ़ में मिलता है। कहा जाता है कि छत्तीसगढ़ में छतीस फिलों का निर्माण हुआ था जिसमें से एक फिला धमतरी में भी निर्मित हुआ था। जिसका भवनारोपित चिह्न खाई के रूप में अब तक विद्यमान है। अनेक विद्वानों के मानों के अनुसार इस क्षेत्र में हैवाचारी राजाओं का भी आधिपत्य हुआ था। हैवाचारी के एक राजा नरसिंह देव ने यहाँ अपना शासन स्थापित किया था। अंत में हम यही कह सकते हैं कि धमतरी का अर्थात ग्राम व्यवित्त से भरपूर है।

तृतीय अध्यय में छत्तीसगढ़ का राज्यांतर, धमतरी अंचल में राज्यांतर का उद्धव एवं विकास का अध्ययन किया गया है। भारत के म्यांगेत आंतर्गत में छत्तीसगढ़ में महत्वपूर्ण योगदान दिया। १८५७ में छत्तीसगढ़ ने आजादी की लड़ाई वड़ी बीता से लड़ी। छत्तीसगढ़ का महान विश्वास छत्तीसगढ़ के सोना-चाँदनी की जमींदारी में प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ में सन १९२० के मध्य सन्तान के अंतर्गत आंतर्गत ४१
सूर्यपाट हुआ। इस सत्यग्रह का संचालन पं. सुंदर लाल शर्मा, नारायण एवं जी भेपावलेएवं बाबू घोटेलाल श्रीवस्तव ने किया। 5 फरवरी 1921 में राष्ट्रीय विवादाय की स्थापना की गई। 15 अप्रैल 1930 को रायपुर में महाकोष राजनीतिक परिषद का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सन् 1940 को महात्मा गांधी द्वारा व्यक्तिगत सत्यग्रह का आन्दोलन किया गया जिसका प्रभाव छत्तीसगढ़ पर भी देखा गया। सन् 1941 में व्यक्तिगत आंदोलन ने छत्तीसगढ़ में पुनः जोर पकड़ा। इस तरह सन् 1948 तक छत्तीसगढ़ की रिख्तासंग की जनता को उत्तरदायी शासन की प्राप्ति हो गयी। इस तरह हम कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ में हुए समस्त आंदोलनों में वहाँ की जनता एवं राज नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो सदैव याद किये जाते रहेंगे। छत्तीसगढ़ के अमर शहीदों ने देश को स्वतंत्र करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

छत्तीसगढ़ में धमतरी क्षेत्र भी प्रारंभ से ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख केन्द्र रहा। संपूर्ण छत्तीसगढ़ में धमतरी ही एक ऐसा ज्ञान था जहाँ सन् 1901 के प्रारंभ से ही स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हो चुका था। जो कालांतर में सन् 1905 के बंग भंग के परिणाम स्वतंत्र नामक हो चुका था। जो गाँधी नगर में राजनीतिक जागृति की लहर उस समय स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। अगस्त 1918 में अप्रैल 1918 में वहाँ प्रथम राजनीतिक परिषद की स्थापना जानू हुई। जो बाद में सन् 1919 में किया गया। 21 दिसंबर 1920 को गाँधी जी ने मौलाना शोकत अली के साथ धमतरी पहुँचे। 1921 में सर्वसम्मति से तहसील कोन्ग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी बनी। 1923 में प्रसिद्ध झंडा सत्यग्रह हुआ। धमतरी ने झंडा सत्यग्रह में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1930 को धमतरी नगर में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया। सन् 1933 को गांधी जी का छत्तीसगढ़ में पुनः आगमन हुआ तथा धमतरी नगर में दीवार आगमन हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि आन्दोलन की लड़ाई के बाद भारतीय राजनीतिक इतिहास के पृष्ठों को उल्लिखित है तो हमें जात होता है कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा था लेकिन सबसे अधिक आन्दोलके मतवालों ने गढ़ धमतरी क्षेत्र ही था।

अपने शोध कार्य के चलत के अध्ययन के मैंने धमतरी में हुए राजनीतिक गतिविधियों एवं जनजागृतियों का इतिहास प्रस्तुत किया है। धमतरी में हुए राजनीतिक सम्मेलनों के
बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

पंचम अध्याय में धमतरी अंचल में हुये कण्डेल नहर सत्याग्रह की जानकारी दी है। कण्डेल नहर सत्याग्रह की पृष्ठभूमि, सर्वनाम, प्रभाव आदि का अध्ययन किया गया है। कण्डेल नहर सत्याग्रह की तुलना गौड़ी जी ने मुजरात के बारहबाली आंदोलन से की थी। कण्डेल नहर सत्याग्रह का सफल संचालन बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में किया गया था। इस आंदोलन का प्रारूप बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के खिलाफ हुआ था। अंतर्गत सक्षर ने किसानों के नहर कर लगा दिया किसानों के कर न पटाने पर दमनकारी नीति अपनाई गई तथा इसी दमनकारी नीति के विरोध में बाबू छोटेलाल के नेतृत्व में कण्डेल नहर सत्याग्रह किया गया तथा यह सत्याग्रह पूर्ण रूप से सफल भी हुआ।

छठवें अध्याय में धमतरी अंचल में आश्वयोग आंदोलन एवं उसके प्रभाव का तथा धमतरी अंचल में हुये जंगल सत्याग्रह आंदोलन का वर्णन किया है। गौड़ी जी ने सन् 1920 में संदेश दिया कि स्वाधीन की प्राचीन के लिये अहिंसादमक्त आश्वयोग की नीति अपनाई चाहिये। इस प्रकार छठवें अध्याय में सन् 1920 के मध्य सत्याग्रह आंदोलन का सूचनारूप हुआ। इस सत्याग्रह का कारण था कि सरकार ने किसानों पर नहर कर लगा दिया था। यह सत्याग्रह शांतिपूर्वक चलता रहा तथा गौड़ी जी ने इसे अपना मार्गदर्शन देना स्वीकार किया था। इस सत्याग्रह में किसानों की जीत हुई थी।

सन् 1930 में छठी नवगाँव में जंगल सत्याग्रह शुरू हुआ। इस सत्याग्रह के अंतर्गत अनेक बाँयुद नेताओं को गिरफ्तार किया गया तथा यह काफी लम्बे समय तक चला। सिहावा क्षेत्र जंगल सत्याग्रह स्व. पं. नागरण एवं जी मेघाले के नेतृत्व में प्रारंभ किया गया। अनेक उल्लोही कार्यकर्ताओं ने मार्ग कर दिया शुरू कर गिरफ्तारियों की और जेल गये। गद्दा शिल्ली सत्याग्रह पातलु मवेशियों को जितने सरकार ने पास करने के आरोप में पकड़ लिया था, जो मुक्त करने के उद्देश्य से किया गया था। इस तरह धमतरी क्षेत्र में अनेक जंगल सत्याग्रह हुये ब सफल भी रहे।

सातवें अध्याय में धमतरी अंचल के जन आंदोलन से संबंधित नेताओं एवं उनके महत्वपूर्ण योगदान का वर्णन किया गया है। प्रमुख, जन नेता है- नागरण एवं जी मेघाले, पं. सुधारात रामाय, नन्द्यू जी जगताप, बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव, श्यामलाल
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में धमतरी अंचल का अपना एक विशिष्ट योगदान है। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही इस अंचल में जन-जागृति रही। कंडेल नर हर सत्याग्रह एक महत्वपूर्ण घटना है। प. संदेशलाल शर्मा के प्रयासों से कलकत्ता से महात्मा गांधी को धमतरी लाने का श्रेय कंडेल के किसानों को जाता है। बाद में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व देश के अन्य नेतागण इस अंचल में आये।

धमतरी अंचल के राष्ट्रीय आंदोलन के मूल में जनताओं का महत्वपूर्ण भूमिका है। अन्य समस्त समाजसेवी विभिन्न मंडल में इस अंचल के राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव समाजवादिक दृष्टिकोण में हुआ है।

(5)